भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 4443
बुधवार, 30 मार्च, 2022 को उत्तर दिए जाने के लिए

यूएन स्वच्छ समुद्र कार्यक्रम

4443. श्री जयंत सिन्हा:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) भारत संयुक्त राष्ट्र स्वच्छ समुद्र कार्यक्रम के माध्यम से किन-किन व्यापक उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहता है;
(ख) क्या मंत्रालय ने ऐसे उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कोई शोध/नीतिगत उपाय किए है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
(ग) क्या देश में समुद्री कचरे के स्तर और प्रकृति का अध्ययन करने के लिए कोई कदम उठाए गए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) संयुक्त राष्ट्र स्वच्छ समुद्र कार्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

(i) भारतीय तटीय समुद्रों में समुद्री कूड़े की कुल मात्रा का पता लगाकर निर्धारित करने और समुद्र में प्लास्टिक के प्रवाह को कम करने के लिए एक राष्ट्रीय समुद्री कूड़ा कार्य योजना स्थापित करके समुद्री कूड़े और प्लास्टिक प्रदूषण के विरूद्ध एक त्वरित और ठोस कार्रवाई।
(ii) समुद्री कूड़े और प्लास्टिक प्रदूषण के बारे में जनता में जागरूकता पैदा करना।

(ख) जी, हाँ। राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र (एनसीसीआर), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय का एक संबद्ध कार्यालय, समुद्र तटों में कूड़े(मैक्रो, मेसो, और माइक्रोप्लास्टिक्स)और तटीय समुद्र में माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा निर्धारित करने, तलछट एवं वाणिज्यिक मछलियों, सीपियों और पर्पटी सहित विभिन्न बायोटा में अनुसंधान गतिविधियों कर रहा है। भारत के पूर्वी तट के लिए सूक्ष्म प्लास्टिक प्रदूषण के स्तर के संबंध में डेटा सृजित कर लिया गया था और पश्चिमी तट का मूल्यांकन शीघ्र ही किया जाना प्रस्तावित है। राष्ट्रीय समुद्री कूड़ा नीति तैयार करने हेतु रोडमैप तैयार करने के लिए विभिन्न शोध संस्थानों के प्रतिभागियों, हितधारकों और नीति निर्माताओं, औद्योगिक और शैक्षणिक विशेषज्ञों के साथ एक राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला आयोजित की गई थी।
(ग) जी, हाँ। अखिल भारतीय तटीय निगरानी के तहत, 2018-2021 तक समुद्री कूड़े का आकलन करने के लिएएनसीसीआर, चेन्नई द्वारा भारत के विभिन्न समुद्र तटों पर नियमित अंतरालों पर समुद्र तट की स्वच्छतासंबंधी गतिविधियां की जा रही हैं और यह पाया गया कि सिंगल यूज प्लास्टिक काइसमें 50% से अधिक कायोगदान था। समुद्र तट कूड़ा सर्वेक्षण से यह भी पता चला है कि सबसे अधिक कूड़े का संचय अंत:ज्वारीय क्षेत्र की तुलना में बैकशोर में होता है। इसके अतिरिक्त, शहरी समुद्र तटों पर ग्रामीण समुद्र तटों की तुलना में संचय दर अधिक है। तटीय समुद्र, तलछट, समुद्र तट और बायोटा के नमूनों का विश्लेषण सूक्ष्म/मेसो/ मैक्रो प्लास्टिक प्रदूषण के लिए किया जाता है। मानसून के दौरान भारत के पूर्वी तट पर माइक्रोप्लास्टिक की मात्रा में वृद्धि देखी गई है। नदी के मुहाने पर स्थित स्थानों पर माइक्रोप्लास्टिक सांद्रता अधिक थी।

*****